International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 11; November 2017; Page No. 205-206

उत्तराखणड में आपदा से पर्यावरण मे होने वाले खतरो के कारक एंव प्रबन्धन

[1] नीता बोरा शर्मा, [2] भूमिका प्रसाद

[1] प्रो0, डी0 एस0 बी0 परिसर कुमाऊँ विश्व विद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत।

[2] शोध छात्रा, डी0 एस0 बी0 परिसर कुमाऊँ विश्व विद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत।

सारांश

पर्यारण शब्द का निर्माण दो शब्दों 'परि 'और आवरण से मिलकर बनता है, जिसमे परि का मतलब है हमारे आस–पास अर्थाथ जो हमारे चारों ओर है, और आवरण जो हमें चारों ओर से घेरें हुए है। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की कुल इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रीय आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन और जीविता को तय करते हैं।

शब्द कुन्जी : पर्यावरण, प्रबन्धन, रासायनिक, भौतिक

प्रस्तावना

पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े–मकोड़े, सभी जीव–जन्तु और पेड़–पौधों के अलावा उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएँ और प्रक्रियाएँ भी शामिल हैं। जबकि पर्यावरण के अजैविक संघटकों में निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएँ आती हैं, जैसे – पर्वत, चट्टानें, हवा, नदी और जलवायु के तत्व इत्यादि।

सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं से मिलकर बनी इकाई है। यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती और सम्पादित होती है।

मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएँ पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। इस प्रकार किसी जीव और पर्यावरण के बीच का संबंध भी होता है, जो कि अन्योन्याश्रित है।

सामान्यता

पर्यावरण को मनुष्य के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है और मनुष्य को एक अलग इकाई और उसके चारों ओर व्याप्त अन्य समस्त चीज़ों को उसका पर्यावरण घोषित कर दिया जाता है। किन्तु यहाँ यह भी ध्यातव है कि अभी भी इस धरती पर बहुत सी मानव सभ्यताएँ है जो अपने को पर्यावरण से अलग नहीं मानती और उनकी नज़र में समस्त प्राकृति एक ही इकाई है जिसका मनुष्य भी एक हिस्सा है। वस्तुतः मनुष्य को पर्यावरण से अलग मानने वाले वे हैं जो तकनीकी रूप से विकसित है और विज्ञान और तकनीक के व्यापक प्रयोग से अपनी प्राकृतिक दशाओं में काफी बदलाव लाने में समर्थ है।

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो प्रखण्डों में विभाजित किया जाता है– प्राकृतिक या नैसर्गिक, पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण, हालाँकि पूर्ण रूप से प्राकृतिक पर्यातरण (जिसमें मानव हस्तक्षेप बिल्कुल न हुआ हो,) कही नही पाये जाते। यह विभाजन प्राकृतिक प्राक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और–पूनता का द्योतक मात्र है परिस्थिति की और पर्यावरण भूगोल में प्रकृतिक पर्यावरण शब्द का प्रयोग पर्यावास (Habitat) के लिए भी होता है।

तकनीकी मानव द्वारा आार्थिक उदेश्य और जीवन में विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ व्यापक छेड़छाड़ के क्रियाकलापों ने प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन नष्ट किया है, जिससे प्राकृतिक व्यवस्था या प्राणाली के आस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न हो गया है। इसी तरह की समस्याएँ पर्यावरणीय अवनयन कहलाती है।

पर्यावरणीय समस्याएँ जैसे प्रदूषण जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवन शैली के बारे में पुनाविचार के लिए प्रेरित कर रही है। और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंध की चर्चा है मनुष्य वैज्ञानिक और तकनीकि रूप से अपने द्वारा किये गयक परिवर्तनो से नुकसान को कितना कम करने मे सक्षम है आर्थिक और राजनीतिक हितो की टकराव मे पर्यावरण पर कितना ध्यान दिया जा रहा है और मनुष्यता अपने पर्यावरण के प्रति कितनी जागरूक है यह आज के ज्वलन्त प्रश्न है।

इसमे मैने आपदा के अन्तर्गत भूस्खलन का वर्णन किया है।

आपदा मानव जीवन ही नहीं अपितु राष्ट्रीय सुरक्षा को भी प्रभावित करती है। प्रस्तुत लेख में आपदा के अन्तर्गत भूस्खलन के कारणों, उत्तराखण्ड के प्रमुख भूस्खलन की घटनाओं प्रमुख भूस्खलन क्षेत्रों तथा इनका राष्ट्रीय सुरक्षा पर पडने वाले प्रभावों का वर्णन किया गया है। उत्तराखण्ड में भूस्खलन एक गम्भीर प्राकृतिक आपदा है जिस पर भूवैज्ञानिक अध्ययन के साथ आपदा से निपटने के लिए स्थानीय प्रबन्धन तन्त्र को मजबूत करने की आवश्यकता है। शोध पत्र में भूवैज्ञानिक कारकों, खतरे से पूर्व तैयारी एवं प्रबन्धन, खतरे के दौरान तथा उसके बाद के प्रबन्धन एवं बचाव कारकों पर प्रकाश डाला गया है।

भूस्खलन भारत में एक प्रमुख प्राकृतिक संकट है जो मानव जीवन, संचार मार्गों, मानव बस्तियों, कृषि क्षेत्र एवं वनों आदि को भारी क्षति पहुँचाने के लिए उत्तरदायी है। भारत के हिमालय क्षेत्र, पश्चिमी घाट तथा नदी घाटियों में भूस्खलन होने की सम्भावना सर्वाधिक होती है। हिमालय क्षेत्र में मानसून के समय भूस्खलन होना सामान्य घटना है। कभी –कभी तीव्र वर्षा तथा भारी हिमपात के समय भूस्खलन भयावह रूप धारण कर लेता है, जिससे प्रत्येक वर्ष अपूर्णीय क्षति होती है तथा जिससे मानव जीवन पर दीर्घकालीन सामाजिक प्रभाव पड़ते हैं। मृत्यु, सदमा और आद्यात, विस्थापन एवं

आश्रय, मानसिक एवं शारिरिक विक्षिप्ता, स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताएं, शिक्षा, महिलाओं की सुरक्षा वैधानिक पहलू, अनैच्छिक पुनर्वास पुर्ननिमाण तथा पुर्नलाभ की आवश्यकतायें आदि पर भूस्खलन का प्रभाव देखने को मिलता है। भूस्खलन से प्रभावित क्षेत्रों की जनसंख्या एवं सामाजिक सरंचना विस्थापन तथा मानव मृत्यु से मुख्य रूप से प्रभावित होता है। प्राकृतिक कारणों के साथ–साथ मानव जनित कारण जैसे, जनसंख्या दबाव, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक, दोहन, सड़कों एवं भवनों आदि के निमार्ण हेतु चट्टानों एवं पत्थरों को तोड़ने हेतु कृतिम कम्पन का प्रयोग, जल संग्रह आदि मुख्य रूप से भूस्खलन के लिए उत्तरदायी है। भूस्खलन सम्भावित क्षेत्रों का माचित्रण, सूचना प्रौद्योगिकी तथा आधुनिक तकनीकी के प्रयोग के साथ–साथ स्थानीय समुदायों की सहभागिता से भूस्खलन की घटनाओं एवं इसके प्रभावों कम को किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. आर0सिंह0बी0 चक्रवर्ती डी0 एवं कोहली, 2007 ए फिल्ड मैनुअल फार लैंडस्लाइड्स इनवेस्टिगेसन, डी0एस0टी0 नई दिल्ली।
2. झा0 किरण, 2010, भारत का भूगोल, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली।
3. सिंह आर0ए0, 2012, भूस्खलन एवं पर्यावरण ह्रास, कंसल प्रिटर्स, सुमित्रा सदन, मल्लीताल नैनीताल।
4. कुमार राजेश, 2014, उत्तराखण्ड हिमालय में सतत् आर्थिक विकास एवं नियोजन, रिसर्च इंडिया प्रेस, नई दिल्ली।
5. अधीर तारा दत्त पाण्डे, 1998, पर्यावरण परिपेक्ष्य में उत्तराखण्ड विकास उत्तरायण प्रकाशन, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)।
6. चौधरी विजय कुमार, 2005, उत्तरांचल पर्यावरण एवं विपणन का विकास, इन्टर–इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली।